चौबीस तीर्थंकर

लेखक, संकलक, प्रकाशक एवं प्रधान संपादक

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेलन कॉलोनी, बेदला–बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर

मोबाईल : 09461384906

ॐ, ह्रीं अर्हं नमः

लेखक, संकलक, प्रकाशक
एवं प्रधान संपादक
मोहनलाल बोल्या
37, शांति निकेलन कॉलोनी,
बेदला-बड़गांव लिंक रोड़,
उदयपुर (राजस्थान)
मोबाईल : 94613 84906

सह लेखक
श्री हरकलाल पामेचा
देलवाड़ा (राज.)

डिजाईनिंग-प्रिन्टिंग :
मल्टी वेव ग्राफिक्स
50, कोलीवाड़ा, बापू बाजार
रावत बुक गली, उदयपुर (राज.)
मो. 98292 44710

मूल्य :
150/- रुपये

श्री सरस्वतीदेवी

समर्पण : परम उपकारी गुरूदेवों को समर्पित

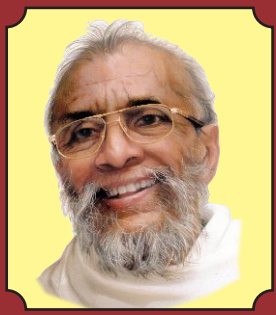

प्राचीन शास्त्रोद्धारक देशनादक्ष
आचार्यदेव विजय
श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

वर्द्धमान तपोनिधि आचार्यदेव
श्री विजय कल्याणबोधि
सूरीश्वर जी म.सा.

सिद्धहस्त लेखक
आचार्य विजय
श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.

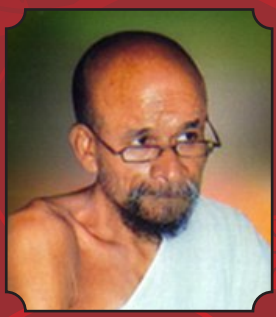

मेवाड़ देशोद्धारक आचार्य श्री
जितेन्द्रसूरीश्वर जी म.सा. के सुशिष्य
पन्यास प्रवर **श्री निपुणरत्न सूरीश्वर जी म.सा.**

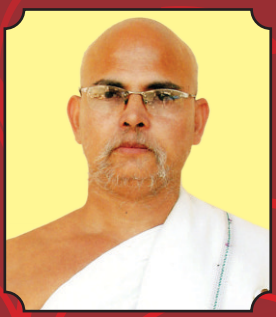

आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीश्वर जी
म.सा. के सुशिष्य पन्यास प्रवर
श्री अपराजित विजय जी म.सा.

उपकारी परिवारजन को समर्पित जिनका लेखक ऋणी है

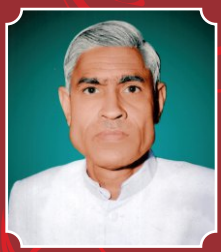

स्व. पितृ श्री रोशनलाल
जी बोल्या

स्व. श्री मातु श्री गुलाबदेवी
बोल्या

स्व. पत्नी श्रीमती वसंतीदेवी
बोल्या

श्रीमती सुशीलादेवी
बोल्या

आशीर्वचन

सुश्रावक श्री मोहनलाल जी बोल्या,

धर्मलाभ ।

हम सब सुखसाता में है आप भी सकुशल होंगे ।

आगम ग्रन्थ माला का संकलन, इस उम्र में व अस्वस्थता की स्थिति होने पर भी इस महत्वपूर्ण विषय पर संकलन कर लिखने का प्रयास किया जो सराहनीय व अनुमोदनीय है।

आशा है इस ग्रन्थ को पढ़कर पाठकगण को जैन धर्म के बारे में जानकारी होगी ।आप अपना स्वास्थ्य सम्भाले व परिवार के सभी को धर्मलाभ ।

आपके स्वस्थ होने की मंगल कामना करता हूं ।

आचार्य विजय कल्याणबोधिसूरि.

द : कल्याणबोधिसुरि

17.11.2017

रामनगर, साबरमती, अहमदाबाद

आशीर्वचन

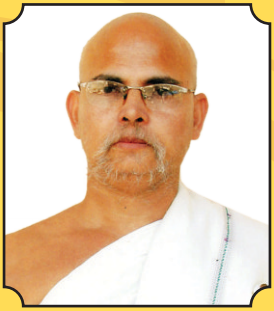

सुश्रावक श्री मोहनलाल जी बोल्या,

धर्मलाभ ।

गुरू–भक्त का एक अनोखा रिश्ता रहता है । हम सर्वप्रथम उदयपुर विहार करते हुए आए उस समय मोहन भाई से परिचित हुए, उस समय आपका उदयपुर नगर के मन्दिरों का कार्य देखा, प्रभावित हुआ, पैसा तो मिल सकता है लेकिन इस प्रकार का कार्य करने वाला नहीं मिलता । तब से आपका व हमारा परिचय का लम्बा सफर चल रहा है और आज भी चला आ रहा है । यह है गुरू और भक्त का रिश्ता । इन पुस्तकों को घर बैठ कर पढ़ना व दर्शन लाभ लिया जा सकता है।

इस क्रम में आपने निरन्तर शासन की सेवा करते हुए मेवाड़, वागड़, सिरोही, पाली जिले के मन्दिरों का इतिहास, प्राचीनता को दर्शाया है । इन पुस्तकों के द्वारा साधु–साध्वी, समाज के साधर्मिक सदस्य लाभान्वित हुए है । सुना है कि इन पुस्तकों के माध्यम से कतिपय छात्र–छात्राओं ने पी.एच.डी. की है । यह सौभाग्य की बात है कि जैन धर्म की बारिकियों का अध्ययन हुआ है ।

अब आपने आगम का सार का लेखन किया है जिसमें आगम के चित्र भी संकलित कर प्रस्तुत किये हैं जिनको देख कर ही आगम को पहचाना जा सकता है । जिसका सम्पूर्ण इतिहास का संकलन व साधारण भाषा में लेखन का ही अनुमोदना करते हैं ।

श्री मोहनलाल जी का स्वास्थ्य खराब चल रहा है तीन बार हार्ट सर्जरी हो चुकी है, ऊपर से वृद्धावस्था के साथ आँखों की रोशनी अति शीर्ण होने पर भी इस पुस्तक का प्रकाशन कर रहे है जो सबके लिए अनुकरणीय है । आप स्वस्थ, दीर्घायु होकर शासन की सेवा में संलग्न रहे यही आशीर्वाद व शुभकामनाएँ ।

द. अपराजित विजय

पं. अपराजित विजय म.सा.

मंगलकामना

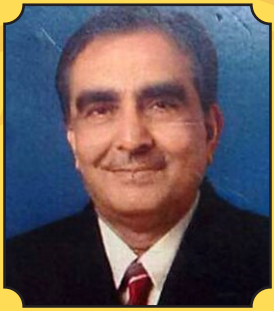

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या,

जय जिनेन्द्र ।

आपने पूर्व में मेवाड, वागड व सिरोही जिले के समस्त श्वेताम्बर मन्दिरों का इतिहास व प्राचीनता मय प्रमाणीकरण लेखों सहित प्रकाशित किया है ।

अब आप आगम पर लिख रहे हैं, आगम के बारे में कहा जाता है कि इसमे भगवान महावीर की वाणी है । परम्परा के अनुसार इन आगमों का अध्ययन आचार्य भगवन्तों व साधु भगवन्तों को ही है । इनका वाचन कर श्रावक–श्राविकाओं को प्रवचन के माध्यम से जानकारी देने का अधिकार आचार्य भगवन्तों व साधु भगवन्तों को ही है । यहाँ तक साध्वी भगवन्तों को पढने का निषेध है ।

हां, यह अवश्य है कि वर्तमान काल में सभी साधु–साध्वी भगवन्त पढ़ रहे हैं तथा ताम्र पत्र पर, दीवार पर खोदे जा रहे है जिनको सभी पढ़ सकते है। लेकिन इन्हे पढना व समझना इतना सरल नहीं है।

श्री बोल्या सा., आपका स्वास्थ्य खराब होने के साथ साथ नैत्र ज्योति भी काफी क्षीर्ण हो गई है फिर भी आप अन्य साथी का पूर्ण सहयोग से लेकर साधारण हिन्दी भाषा में लिखकर सराहनीय एवं अनुकरणीय कार्य कर रहे हैं। इससे श्रावक–श्राविकाऐं लाभान्वित होंगे तथा इन ग्रन्थों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।

मैं एवं मेरे ट्रस्टीगण श्री बोल्या जी के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं, साथ ही उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों के प्रति बहुत बहुत अनुमोदना करते हैं।

M. S. Dalal

(मोहनसिंह दलाल)
अध्यक्ष
श्री जैन श्वेताम्बर वासूपूज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट

Raj Lodha

(राज लोढ़ा)
सचिव
श्री जैन श्वेताम्बर वासूपूज्य महाराज मंदिर ट्रस्ट

मंगलकामना

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या सा.

जय जिनेन्द्र ।

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्ता हुई कि आप जैन आगम पर हिन्दी भाषा में रुपान्तर कर पुस्तक प्रकाशित कर रहे हैं । आपका स्वास्थ्य व आंखों की रोशनी में तकलीफ रहते हुए भी आपने इतना साहस किया है जिसकी जितनी भी अनुमोदना की जाए कम ही है ।

ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूं कि आप स्वस्थ रहे, चिरंजीवी बनकर समाज में ज्ञान का दीपक प्रकाशित करते रहें ।

इसी आशा के साथ ।

Ranjit Singh

(रणजीतसिंह सरूपरिया)

अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर चतराम वाला उपासरा

उदयपुर

मंगलकामना

आदरणीय भाई सा. मोहनलाल जी सा. बोल्या

सादर जय जिनेन्द्र ।

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्ता हुई कि आपका स्वास्थ अनुकुल नहीं होने के बाद भी आप जैन धर्म के मूल गुढ़ रहस्य 'जैन आगम' पर पुस्तक प्रकाशित करने जा रहे हैं। आगम ग्रन्थ जैन धर्म की वैशाखी पर टिका हुआ है । इसकी जितनी प्रसन्नता व्यक्त की जाए, वह कम है।

आगम के भावों को आपने हिन्दी भाषा में रूपान्तर कर अलौकिक कार्य किया है। अन्य भाषा में होने के कारण कई व्यक्ति लाभ नहीं ले सकते । अब हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने पर जैन अनुयायी के साथ साथ अन्य हिन्दी भाषी श्रावक भी लाभ ले सकेंगे ।

आपका स्वास्थ अनुकुल नहीं होने के पश्चात भी आपने व आपके सहयोगियों का धन्यवाद करते हुए शासन देव से प्रार्थना करता हूं कि आप स्वस्थ रहे, दीर्घायु हो और इसी तरह शासन में ज्ञान का प्रकाश फैलाते रहे ।

पुनः आपका आभार व धन्यवाद

तेजसिंह बोल्या

मंत्री : श्री जैन श्वेताम्बर चतराम वाला उपासरा, उदयपुर

अध्यक्ष : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर

उपाध्यक्ष : ओसवाल बड़े साजनान सभा, उदयपुर

भावनात्मक संदेश

बड़े भ्राता तुल्य श्री बोल्या साहब,

सरस्वती कृपा पात्र, जिन शासनप्रेमी को प्रणाम ।

आपने पूर्व में मेवाड़, वागड़ व मारवाड़ (सिरोही व पाली जिलों) के मन्दिरों का इतिहास उत्कीर्ण लेखों व उसकी प्राचीनता को दर्शाया जिसे साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाएं बहुत लाभान्वित हुए, साथ ही यह प्रकाशन उपयोगी सिद्ध हुआ है ।

अब आप आगम सुत्र पर लिखने जा रहे हैं, यह जानकर अति प्रसन्नता हुई। आगमों के सूत्र से संतो व सज्जनों को जागते व जगाते रहना ही अच्छा प्रयास है ।

इस भव में आप स्वस्थ व दीर्घायु रहे ताकि समाज व धर्म उपयोगी साहित्य का सृजन कर सके ।यही मेरी आपके प्रति शुभकामनाएँ है ।

सोहनलाल सुराणा

(सोहनलाल सुराणा)

समाज सेवी एवं जैन साहित्य के पोषक

सेवाड़ी, जिला पाली

लेखक के मन की बात

मंदिरों का इतिहास लिखने के पश्चात् मेरे मन में विचार आया कि अब घर में बैठकर जैन धर्म में प्रचलित ग्रंथों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी जाए। ऐसे ग्रंथ जिन्हे किसी समय में केवल श्रवण ही किया जा सकता था, पठन नहीं किया जाता था। ऐतिहासिक दृष्टि से आगमिक शास्त्र जिनका सरलीकरण प्रस्तुत करने का एक छोटा सा प्रयास है।

आगम साहित्य का वर्णन करने के पूर्व आगमिक सिद्धान्त के पूर्व जैन धर्म की स्थिति का ज्ञान जान ले तो उत्तम होगा।

लेखन कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व मेरी ओर से सभी को 'मिच्छामि दुग्गडम्' बिना किसी भेद, विवाद, कटाक्ष व पक्षपात से परे होकर केवल श्वेताम्बर समुदाय में प्रचलित आगम का ही वर्णन है, आवश्यकता होने पर जगह–जगह पर उदाहरण स्वरूप अवश्य समाधान किया जा सकेगा। मैं व्यक्तिगत दृष्टि से मूर्तिपूजक समाज का सदस्य होने के नाते मूर्तिपूजक समुदाय में प्रचलित साहित्य का संदर्भ अधिक होगा, इस कृत्य में किसी को अच्छा न लगा हो तो उनसे भी मिच्छामि दुग्ग्ड्म्।

प्राचीन काल में भारत में प्रायः तीन संस्कृतियों (1) जैन (2) सनातन (3) बौद्ध का प्रार्दुभाव था

इन तीनों संस्कृति का अध्ययन किया जाए तो अनेक तथ्य सभी में मिलते है। सारांश में लिखा जावे तथा तीनों संस्कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन एक साथ किया जाए तो तीनों के मूल पूरक तथ्य को ग्रहण करने से एक संस्कृति पूरी होगी या अधूरी रहेगी।

जैन धर्म प्रचलित परम्परा के प्रभावी आचार्य गौतम आदि गणधर महावीर की वाणी को सुनकर उन्हें सत्य का बोध हुआ तथा तत्काल बिना किसी विचार किए परम्परागत मान्यता, आस्थाओं को त्याग कर उन्होंने सत्य के साथ आत्मसात किया।

महावीर भगवान के शिष्य जम्बूस्वामी तक किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं था। दोनों सम्प्रदाय, श्वेताम्बर व दिगम्बर में एक ही मान्यता रहीं, लेकिन बाद में भेद हो गया। श्वेताम्बर समाज में दो प्रमुख स्थिरावलियों की मान्यता है जिसमें से एक कल्पसूत्र में वर्णित है तथा दूसरी नंदी सूत्र के मंगलपाठ में वर्णित है। मथुरा कंकाली टीलों के खनन से प्राप्त मूर्तियें, स्तंभ से प्राचीनता प्रमाणिक होती है। सारांश यह है कि कल्पसूत्र की स्थिरावली व नंदी सूत्र की स्थिरावली प्रमाणिक है।

महावीर के निर्वाण के पूर्व व पश्चात् जैन धर्म विशाल रूप लिए हुए था।

छेद सूत्रों में निर्वाणोत्तर काल में श्रमण संघ की व्यवस्था का वर्णन है। श्रमण संघ में आचार्य, उपाध्याय, गणि, गणधर आदि पद का वर्णन स्थानाग सूत्र व वृहद कल्पसूत्र में उपलब्ध है।

जिनेश्वर भगवान द्वारा प्ररूपित आगमिक ज्ञान अथवा आगम ज्ञान को अपने हृदय में आत्मसात करने वाले शिष्यों को जो विनयशील, मर्यादाशील हो वह आचार्य कहलाते थे। श्रमण समूह व श्रमणी समूह आचार्य के ही आज्ञानुव्रती रहते थे।

भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में प्रमुख शिष्यों को गणधर पद प्रदान कर दिया था और श्री सुधर्मास्वामी को दीर्घजीवी समझकर गणाधीश पद दिया था अर्थात् उनको, उनका उत्तराधिकारी बनाया।

भगवान महावीर के निर्वाण के थोड़े समय बाद ही गौतम स्वामी को भी केवल ज्ञान की प्राप्ति हो गई थी और इसीलिए अंतिम तीर्थंकर की प्ररूपित श्रुत परम्परा महावीर की न होकर गौतम केवली की श्रुत परम्परा कही जाती है। उस समय सुधर्मा स्वामी चार ज्ञान व चतुर्दश पूर्वों के ज्ञाता थे और उनको महावीर के निर्वाण के 12 वर्ष पश्चात् केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

महावीर के निर्वाण के बाद अपने छद्मवस्था में प्रवचन में कहा करते थे कि भगवान महावीर ने ऐसा देखा, वैसा देखा, ऐसा उपदेश दिया। लेकिन केवल ज्ञान प्राप्त होने पश्चात् ऐसा नहीं कहते वरन् मैंने देखा, मैं कह रहा हूँ, मैं ऐसी आज्ञा में रहा हूँ।

भगवान महावीर ने जब गौतम स्वामी के साथ 11 गणधर को दीक्षित किया उस समय उन्हें (गणधर को) त्रिपदी ज्ञान व गणधर का पद दिया। प्रभु की वाणी के अनुसार उन्हें चतुर्दशी पूर्व का ज्ञान भी प्राप्त हुआ।

प्रभु की वाणी के आधार पर सभी 11 गणधर स्वतन्त्र रूप से रचित द्वादशांगी में समानता होते हुए भी वाचना में भेद रहा है। ऐसी मान्यता है कि भगवान महावीर का आगमों का उपदेश सुनकर गौतम ने उसी एक दिन में द्वादशांगी की रचना की जो सर्वमान्य है।

श्वेताम्बर परम्परा की टीका, चूणिमणी, भाष्य आदि मान्य ग्रंथों की रचना गणधरों द्वारा संयुक्त रूप से की है।

केवली का प्रादुर्भाव

वीर निर्वाण संवत् के प्रारम्भिक प्रथम दिन में ही निम्न तीन महत्वपूर्ण घटनाए घटित हुई :–

(1) उसी रात्रि को बुद्ध का अवन्ती के महाराजा चण्ड प्रद्योत के यहाँ जन्म हुआ।

(2) श्री गौतम स्वामी को केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई।

(3) श्री सुधर्मा स्वामी को प्रथम पट्टधर के पद से विभूषित किया, जो आचार्य कहलाए।

महावीर भगवान के निर्वाण के बाद देश में तीर्थंकर काल की समाप्ति हो गई और केवली काल का प्रादुर्भाव हुआ अर्थात् गौतम को केवलज्ञान प्राप्ति होने से ही केवलीकाल प्रारम्भ होता है।

तीर्थंकर काल में व नवीन रचना के कारण द्वादशांगी के शाश्वत व अशाश्वत दोनों ही रूप शास्त्रों में प्रतिपादित है और इस प्रकार 12 अंगों की रचना हुई।

श्री महावीर भगवान ने वैशाख शुक्ला 11 को चतुर्विद्ध संघ की स्थापना की। प्रथम वाचना में इन्द्रभूति आदि 11 गणधरों के साथ ही श्री सुधर्मास्वामी को भी सम्मिलित किया महावीर के 11 गणधरों की रचना में 9 गण थे और

उनकी अलग अलग 9 वाचनाएं थी। 11 में से 9 गणधर तो महावीर के निर्वाण के पूर्व ही मुक्त हो गए बाद में केवल गौतम व सुधर्मा ही शेष रहे।

12 वर्ष पश्चात् गौतम ने गण की उपाधि सुधर्मा स्वामी को सौंप कर निर्वाण को प्राप्त हो गए। गौतम स्वामी को केवलज्ञान प्राप्त होते ही वे भी केवली बन गए। अतः सुधर्मा को छोड़कर सभी दशों गणधरों की शिष्य परम्परा व वाचनांए उनके निर्वाण के साथ ही समाप्त हो गई और आगे नहीं चल सकी।

ऐसी अवस्था में आचार्य सुधर्मा को सभी धर्म तीर्थ के उत्तराधिकार के साथ –साथ प्रवचन का अधिकार भी प्राप्त हो गया और इस प्रकार से सुधर्मा की अंगवाचना प्रचलित रही। बारहवें अंग दृष्टिवाद का विच्छेद (विलोपित) तो बहुत पहले ही हो चुका था और एकदशांगी वाचना चालू थी। स्थानकवासी परम्परा के अनुसार दो पाट के पश्चात दृष्टिवाद का विच्छेद हो जाता है।

यही से अंगों (आगमों) की वाचना का प्रचलन हुआ, अब यहाँ पर आगमों के बारे में समझना चाहिए।

जिस प्रकार महावीर भगवान के 11 ही गणधरों ने अपने अपने स्तर पर अंग की वाचना की है लेकिन मूल रूप से सभी में काफी समानताएँ है। आगमों में जो कुछ कहा गया है वह स्वकल्पित नहीं है वरन् जो कुछ कहा है वह महावीर भगवान की वाणी के द्वारा कहा भाव है, अर्थात् पूर्ण रूपेण वहीं शब्द बद्ध किया गया जो भगवान महावीर ने अपने मुख से वाचन किया। ये एकादशांगी स्वकल्पित नहीं वरन् पूर्णरूप से शब्दबद्ध किए गए है जो महावीर भगवान के मुँह से प्रदान किए गए। ये अंग दोनों ही समुदाय मे मान्य है।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट हो गया कि सभी गणधरों ने बारह अंगों की रचना की और उनकी शैली में न्यूनतम विविधता थी, लेकिन सभी के भाव एक से है।

जैन धर्म व संस्कृति को समझने के लिए आगम शास्त्र ही मूल साहित्य है। जिसे हम आज आगम कहते है उसका प्राचीन नाम गणि पिटक था इसका तात्पर्य यह है जो गणधर द्वारा रचित है जिसमें द्वादशांगी का भी समावेश है।

प्राचीनकाल में लिखने की परम्परा का प्रचलन न था उस समय सर्वज्ञ

(तीर्थंकर भगवान) द्वारा कही गई बाते जिसमें आत्म ज्ञान, तत्व ज्ञान, आचार–व्यवहार आदि को गणधर भगवंतो ने व्यवस्थित रूप से सूत्र के रूप में व्यवस्थित किए, वे ही आज के युग में आगम कहलाते है। इन आगमों को समय, काल, परिस्थिति के आधार पर विभाजित किए है, जिसमें अंग, उपांग, मूल, छेद आदि 45 आगम है। पूर्व में 84 आगमों का वर्णन होने का उल्लेख आता है। स्थानकवासी व तेरह पंथ समाज में 32 आगम मान्य है। दिगम्बर समुदाय में 84 आगम का प्रचलन है।

आगम की परिभाषा विभिन्न आचार्यों ने इस प्रकार की है :–

आचार्य श्री मलयगिरि : 'जिसमें पदार्थों की पूर्णतया के साथ मर्यादित ज्ञान है।'

अन्य आगमों मे भी स्पष्ट किया है कि 'जिससे पदार्थों का यर्थाथ ज्ञान हो' वे आगम है।

तीर्थंकर द्वारा जो बात कही गई है वही बात श्रुत केवली (गणधर) भी कहते है लेकिन अंतर यह है कि तीर्थंकर सम्पूर्ण तत्व प्रत्यक्ष रूप से देखते है, व जानते है, जबकि श्रुत केवली परोक्ष रूप में देखते है व जानते है।

आगम का महत्व

हा, हा आणहा कहं हुंता जई न हूँ तो जिणागम

1444 ग्रंथ के रचियता प.पू. आचार्य श्री हरिभद्रसूरीश्वर जी म.सा. ने उक्त शब्दों द्वारा आगम की महानता को दर्शाया है।

अर्थात

अभी जिणागम न होते तो हम अनाथ होते, हमारा क्या होता ? श्रुत से जैन शासन चलता है और जब तक श्रुत रहेंगे तब तक जैन शासन रहेगा। इसी से श्रुत ज्ञान के महत्व को समझा जा सकता है।

श्रुत ज्ञान को जीवित रखने के लिए और ज्ञानावरणीय कर्म को क्षय करने के लिए ज्ञान को लिपिबद्ध करना होगा जो भगवान महावीर के निर्वाण के 980 वर्ष पश्चात् श्री देवद्धिगणि क्षमा श्रमण द्वारा किया गया।

मेरी नैत्र ज्योति बिल्कुल ही क्षीण हो जाने से शेष बचा हुआ कार्य करने के लिए श्री हरकलाल जी पामेचा निवासी देलवाड़ा का सहयोग प्राप्त हुआ जिसके लिए श्री पामेचा सा. का बहुत–बहुत आभार

जो इतिहासकार, ज्ञानी, शोधकर्ता, धर्म प्रेमी है तथा आप स्थानकवासी होते हुए भी आपने मेरी पूर्व पुस्तकों में सहयोग देते हुए पुस्तक में सहयोगी लेखक के रूप में विशेष सहयोग प्रदान किया।

धर्म तर्क का विषय नहीं है, धर्म को समझने का विषय है।

वर्तमान में बिना समझ कर तर्क अधिक करते है जिसके दो कारण है :–

1) अपने धर्म को महान बताते है, लेकिन सत्य यह है कि कोई भी धर्म छोटा–बड़ा नहीं होता। किसी धर्म को छोटा बनाने से वह छोटा होता है और धर्म भी छोटा हो जाता है क्योंकि कोई भी धर्म झूठ बोलना, घृणा करना, चोरी करना, गर्व करना, नहीं बताता। सभी धर्म सत्य, अहिंसा, दया, मातृत्व की बात करता है।

2) बिना समझे ही जो तर्क करता है, उसका कोई आधार नहीं होता। ऐसा व्यक्ति अज्ञानी कहलाता है और उस व्यक्ति की बात पर सब हाँ में हाँ करते है ऐसा करना अज्ञानी ही कहलाता है अधिक अच्छा यह है कि वह मौन रहे और उसी में उसको पाप के बंधन से मुक्तिमिलेगी।

जैन धर्म भगवान महावीर ने जो देशना दी उसको श्री सुधर्मा स्वामी ने सुनी और जब जम्बू स्वामी ने कई प्रश्न सुधर्मा स्वामी से पूछा तो उन्होंने प्रतयेक प्रश्न के उत्तर में यही कहा 'भगवान ने कहा है कि'

अतः उनके मन में भगवान के प्रति सम्मान था। इन्हीं सभी बातों का आचारांग आदि सभी जिनागमों में वर्णन किया है।

भगवान महावीर ने जो देशना दी उसमें से प्रथम देशना का वर्णन आचारांग सूत्र में, अतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र, भगवती सूत्र, अतगढ़ सूत्र का विस्तार से वर्णन करते हुए अन्य शेष सभी सूत्रों का संक्षेप में वर्णन करते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। लेखन कार्य करते हुए सावधानी रखते हुए किसी प्रकार की त्रुटि व शासन विरूद्ध प्रतीत हो तो क्षमा चाहता हुँ।

इसी उद्देश्य से आगमों का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि जनमानस इसका अध्ययन व मनन कर अमृत रूपी रस का पान कर सके।

पुस्तक में प्रस्तुत विषय सामग्री संकलित कर जन साधारण भाषा में प्रस्तुत करने का छोटा सा प्रयास है जिससे पाठकगण जैन धर्म की बारिकियों को समझ सके ।

बहुत स्थान पर शब्दों, वाक्यों की पुनरार्वती हुई है, इसका मुख्य कारण है कि गणधर श्री सुधर्मास्वामी ने श्री जम्बूस्वामी के प्रश्नों का उत्तर देने में ऐसे ही बोला है।

इस ग्रंथ को बनाने में निम्न का सहयोग प्राप्त हुआ :–

1) श्री सुशीला बोल्या (लेखक की पत्नी)

2) श्री नीरू पत्नी राजेन्द्र लोढ़ा (पुत्री–दामाद)

3) श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ की पेढ़ी, लेखक, भीलवाड़ा

4) श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा

5) श्री चन्द जी सिंघवी, लिंक रोड,.पदमनी, उदयपुर

6) श्री सोहनलाल जी सुराणा, नि. ठाणा

7) श्री हरकलाल पामेचा (सह लेखक) सुपुत्र दिनेश एवं परमेश पामेचा, नि. देलवाड़ा

आप सभी का आभार...

बहुत-बहुत आभार...अनुमोदना

विजय आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य

पं. प्रवर श्री अपराजित विजय जी म.सा.

के उपदेश से....

श्री दहाणुकर वाड़ी महावीर नगर श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन संघ

महावीर नगर, दहाणुकर वाड़ी, कांदिवली (वेस्ट), मुम्बई–400067

इस संघ से ज्ञान खाते की रकम का चेक है,

अनुमोदना अनुमोदना अनुमोदना

सह लेखक के विचार

आगम साहित्य सर्वज्ञ सर्वदर्शी वीतराग प्रभु महावीर के उपदेशों का नवनीत है। यह आगम साहित्य विषय सामग्री की अपेक्षा जितना विशाल एवं विराट है, उससे भी अधिक यह अपनी गरिमा से मंडित है। इस आगम साहितय में दार्शनिक चिंतन के साथ द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, गणितानुयोग और धर्मकथानुयोग आदि सभी विषयों का बड़ी सूक्ष्मता एवं गहनता के साथ चिंतन एवं अनुशीलन किया गया है। भारतीय साहित्य जगत में जैन आगम साहित्य ही एक विशेषता लिए हुए है, जो व्यक्ति को उसकी योग्यता के अनुसार आध्यात्मिक क्षेत्र में प्रवेश के लिए यथायोग्य आगम साहित्य उपलब्ध करवा सकता है। विशिष्ठ योगयता वाले साधक द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग जैसे अति गहन साहित्य का अध्ययन कर नवीन ज्ञान प्राप्त कर सकते है, तो सामान्य साधक कथानुयोग जैसे सरल एवं सरस साहित्य के माध्यम से संसार से निर्वेद भाव को प्राप्त कर संवेग की और आगे बढ़ सकते है। आवश्यकता है हंस बुद्धि से अवगाहन करने की। ऐसा करने पर ही आध्यात्मिक मोती उपलब्ध हो सकते है।

जैन दर्शन में ज्ञान के साथ–साथ श्रद्धा और तद्नुसार आचरण का भी अत्यधिक महत्व है। बिना सम्यक् आचरण के कोरे ज्ञान को सीसे की आँख की उपमा देकर इसे अनुपयोगी बतलाया गया है। इसीलिए चतुर्विध संघ (साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविका) के आचार–विचार, त्याग–तप, आदि की साधना आराधना के लिए भी विपूल मात्रा में आगम साहितय का निर्माण हुआ है, जिसकी आराधना करके साधक मोक्ष के अक्षय सुखों को प्राप्त कर सकता है। साधना में दोष लगने पर प्रायश्चित द्वारा शुद्धिकरण करने के लिए विधि–विधानों की व्यवस्था भी जैन आगम साहित्य में की गई है, ताकि साधक अपनी साधना को शुद्ध बनाये रख सके।

जैन आगम साहित्य के उद्गम तीर्थंकर प्रभु होते है, जो अपनी कठिन साधना–आराधना के बल पर चार घाती कर्मों को क्षय कर केवल ज्ञान–केवल

दर्शन रूपी लक्ष्मी को प्राप्त करते है, जिसके द्वारा वे लोक आलोक के समस्त सूक्ष्म–स्थूल, रूपी–अरूपी सभी अजीव द्रव्यों एवं जीवों के स्वरूप को जानते एवं देखते है। (नंदी सूत्र – भगवती सूत्र 8–2)

यह केवल ज्ञान सम्पूर्ण, प्रतिपूर्ण, आव्यहत, आवरण रहित अनन्त और प्रधान होता है, इससे वे सर्वज्ञ समस्त भावों के प्रत्यक्षदर्शी होते है। वे समस्त लोक पर्याय को देखते व जानते हे। गति–अगति, स्थिति, च्यवन, उपपात, खाना–पीना, करना–कराना, प्रकट–गुप्त आदि समस्त भावों को प्रत्यक्ष जानते व देखते है। (आचारांग 2–15 ज्ञाना 8)

केवल ज्ञानी भगवान का ज्ञान आत्म–प्रत्यक्ष होता है। वे पूर्व आदि सभी दिशाओं में सीमित और असीमित ऐसी सभी वस्तुओं को जानते ओर देखते हे। उनके ज्ञान, दर्शन पर किसी प्रकार का आवरण नहीं रहता ।

'केवल ज्ञानी, अधोलोक में सातों नरक पृथ्वियों को, ऊर्ध्वलोक में सिद्ध शिला तक और समस्त लोक में एक परमाणु से लेकर अनन्त प्रदेशी स्कन्ध तक का अर्थात् समस्त पदार्थों को जानते ओर देखते है और इसी प्रकार सम्पूर्ण अलोक को भी जानते है। (भगवरी सूत्र 14–10)

इस प्रकार पूर्णता प्राप्त होने पर ही तीर्थकर प्रभु संसार के समस्त जीवों के हित के लिए अर्थ रूप में उपदेश फरमाते है। जिसे विमल बुद्धि के धारी गणधर सूत्र बद्ध करते है। यानी मूल अर्थात्मक आगम के प्रणेता तीर्थंकर प्रभु है और उसे सूत्र बद्ध करने वाले गणधर भगवान है। आगम साहित्य की जो प्रमाणिकता है, उसका मूल कारण गणधर कृत होने से नहीं परन्तु उसके अर्थ के प्ररूपक तीर्थंकर भगवान की वीतरागता ओर सर्वज्ञता है गणधर भगवन्त मात्र द्वादशांगी की रचना करते है। शेष अंग बाह्यय आगमों की रचना तो स्थवीर (श्रुत केवली) दस पूर्व से चौदह पूर्व के ज्ञाता होते है ; उन्हीं के द्वारा रचित आगम जैन साहित्य जगत में मान्य है। इसमें किसी भी प्रकार का विरोधाभास नहीं होता है।

वर्तमान में जो आगम साहित्य उपलब्ध है इसका समय–समय पर विभिन्न

रूप से वर्गीकरण हुआ है। यथा–सुतागम, आत्मागम और तदुभयागम। अन्य दृष्टि से आगम के तीन भेद इस प्रकार किये गये है :–

आत्मागम, अनन्तरागम ओर परंपरागम। व्याख्या इस प्रकार है। तीर्थंकर के लिए सूत्र आत्मा गम है। वही अर्थ गणधरों के लिए अनन्तागम है। गणधरों के लिए सूत्र आत्मागम और गणधर शिष्यों के लिए सूत्र अन्तरागम ओर अर्थपरम्परा गम है। गणधर शिष्य के लिए और उनके पश्चात् शिष्य परंपरा के लिए अर्थ और सूत्र दोनों ही आगम परम्परा गम है। इस वर्गीकरण में आगम का मूल स्त्रोत, प्रथम उपलब्धी और पारम्परिक उपलब्धि इन तीनों दृष्टियों से चिंतन किया गया है।

स्थानकवासी परम्परा में 32 आगम मान्य है, उसमें ग्यारह अंग, बारह उपांग, चार मूल, चार छेद और आवश्यक सूत्र। मुर्तिपूजक संघ में 45 आगमों की मान्यता है, जबकि दिगम्बर सम्प्रदाय अपने आचार्य द्वारा रचित साहित्य को ही आगम रूप में मानता है। आगमों पर मूर्तिपूजक संघ, स्थानकवासी संघ एवं तेरापंथ संघ के आचार्यों एवं अन्य विद्वानों ने बहुत रचना की है। पर्यूषण पर्व के पावन अवसर पर स्थानकवासी संघ एवं तेरापंथ संघ में अन्तगड दशासूत्र का वाचन किया जाता है। जबकि मूर्तिपूजक संघ में कल्पसूत्र का वाचन होता है। दिगम्बर समाज में दस दिन का कार्यक्रम आयोजित किया जाता हे। आचर्य श्री अमोलक ऋषि जी म.सा. ने हैदराबाद से, आचार्य श्री घासीलाल जी म.सा. ने अहमदाबाद से, श्रीमधुकर मुनि जी म.सा. एवं सुधर्म संस्कृति रक्षक संघ जोधपुर ने ब्यावर (राज.) से 32 आगमों का प्रकाशन किया है। जैन धर्म को जानने का महतवपूर्ण साधन आगमों का अध्ययन है। रामायण गीता, कुराण, बाईबिल, गणिपिटक, महाभारत का जो महत्व अन्य धर्मों में है वही महत्व आगमों का जैन समाज में है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री मोहनलाल जी सा. बोल्या ने मेवाड, वागड व सिरोही प्रांत के जैन मंदिरों का इतिहास लेखन के पुनित कार्य को सम्पन्न करने के पश्चात् भगवान महावीर के उपदेश 'आगम' व जैनों की जनसंख्या एवं

उनकी वर्तमान स्थिति पर अपनी कलम चलाई है। आपकी नैत्र ज्योति कमजोर हो जाने से आपने लेखन एवं संशोधन के पुनित कार्य में मेरा सहयोग लिया है। मैं इस हेतु आपका हृदय से आभारी हुँ कि आपने पूर्व की तरह मेरा सहयोग लेना उचित समझा। आगामें का सार संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया गया है, जैन समाज की वर्तमान स्थिति एवं पयुर्षण पर्व पर भी अपने विचार प्रकट किये हे। आशा है कि पाठक वर्ग को यह रचना अच्छी लगेगी एवं उनके उपयोगी सुझाव हमें मिल सकेंगे।

एक बार पुनः श्रीमान् बोल्या साहब का उनके उत्कृष्ठ लेखन, संपादन एवं संकलन हेतु आभार। परिवार के सभी सदस्यों का भी आभार प्रस्तुत करना आवश्यक समझता हुँ, क्योंकि उनके सहयोग के बिना यह कार्य करना संभव नहीं हो सकता। आभार प्रदर्शित करता हुँ मेरी धर्म सहायिका श्रीमती प्रेम पामेचा सुपुत्र दिनेश, परमेश, पुत्र वधु श्रीमती अर्चना, श्रीमती सीमा, दामाद श्री महेन्द्रजी पोखरना, सुपुत्री श्रीमती पंकज पोखरना, सुपौत्र शुभम (ठण्म्प), मनन, सुपौत्रीयाँ– प्रियल, आर्ची, हनी एवं दौहित्र श्री प्रांजल का कार्य समर्पित करता हुँ अपने प्रिय दिवंगत सुपौत्र श्री रिषभ पामेचा को, जिसकी मंद मुस्कान आज भी मेरी प्रेरणा की स्त्रोत है।

इस कार्य में जिन–जिन बंधुओं एवं संस्थाओं ने सहयोग प्रदान किया उन सभी का हृदय की असिम आस्था के साथ आभार। आशा है कि कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग प्राप्त होता रहेगा ।

(हरकलाल पामेचा)
M.A. (Eng., Eco) B.Sc, M.Ed
सह लेखक
निवासी देलवाड़ा (मेवाड़)
जिला राजसमन्द (राज.)

लेखक परिचय

नाम	–	मोहनलाल बोल्या
माता	–	स्व. श्रीमती गुलाबकुंवर बोल्या
पिता	–	स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या
जन्म स्थल	–	उदयपुर
जन्म दिनांक	–	15 जून, 1936
शिक्षा	–	बी.कॉम, एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	–	स्व. श्रीमती बसंत बोल्या एवं श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म	–	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	–	सेवानिवृत जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

- उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
- मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ – देलवाड़ा के जैन मंदिर
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ – केशरिया जी
- नवकार मंत्र स्मारिका
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 1
- नमोकार मंत्र – महामंत्र (मौन साधना, मंत्र)
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 2
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 3
- वागड़ प्रदेश के जैन श्वेतामबर मंदिर
- सिरोही एवं पाली जिले के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- जैन धर्म का मूल आधार 'आगम'
- महासभा दर्शन (मासिक पत्रिका) (जनवरी, 2011 से जनवरी, 2016 तक)

संस्थागत कार्य :

- कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
- संयोजक – ज्ञान खाता
- श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

अनुक्रमणिका

1.	आशीर्वचन, मंगलकामना, शुभ संदेश	IV-XI
2.	लेखक के मन की बात	X-XVI
3.	सह लेखक के विचार	XVII-XX
4.	लेखक परिचय	XXI
5.	जैन धर्म का मूल आधार–आगम	1–8
6.	आचरांग सूत्र	9–41
7.	सूत्र कृतांग सूत्र	42–43
8.	स्थानांग (ठाणांग) सूत्र	43
9.	समवायांग सूत्र	44
10.	भगवती सूत्र	45–47
11.	ज्ञातृ धर्मकथांग सूत्र	48–50
12.	उपासक दशांग सूत्र	51–52
13.	श्री अंतगड़ दशांग सूत्र	52–63
14.	श्री अनुत्तरोववाई सूत्र	64–65
15.	श्री प्रश्न व्याकरण सूत्र	65–66
16.	विपाक सूत्र	66–69
17.	श्री औपपातिक सूत्र	70–72
18.	श्री सयमसेणीय सूत्र	72–75
19.	जीवाभिगम सूत्र	75
20.	श्री पन्नवणा सूत्र (प्रज्ञापना)	76
21.	श्री सूर्य प्रज्ञप्ति सूत्र	77
22.	श्री जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र	78–79
23.	श्री चंद्र प्रज्ञप्ति सूत्र	79
24.	निरयावली	80
25.	श्री कल्पावतंसिका	81
26.	पुष्पिका सूत्र	82–83
27.	पुष्प चूलिका सूत्र	84
28.	वृष्णिा दशा सूत्र	85
29.	व्यवहार सूत्र	86
30.	वृहत्कल्प सूत्र	87
31.	निशिथ सूत्र	88
32.	दशाश्रृत स्कन्ध सूत्र	89

33.	महानिशीथ सूत्र	90
34.	जीत कल्प सूत्र	91
35.	दशवैकालिक सूत्र	92
36.	उत्तराध्ययन सूत्र	93–100
37.	आवश्यक सूत्र	101
38.	पिण्ड निर्युक्ति सूत्र	102
39.	प्रकीर्णक चतुः शरण सूत्र	103–104
40.	आउरप्रत्याख्यान सूत्र	105
41.	भक्त परिज्ञा सूत्र	105
42.	संस्तारक सूत्र	106
43.	तदुल वैचारिक सूत्र	107–109
44.	श्री चंदाविज्ज पयन्ना सूत्र	110
45.	देवेन्द्रस्तव सूत्र	111
46.	गणिविद्या सूत्र	112
47.	महाप्रत्त्याख्यान सूत्र	113
48.	वीर स्तव	114
49.	नन्दी सूत्र	115
50.	अनुयोगद्वार सूत्र	116–120
51.	साधु व राजा का संवाद	121
52.	पर्युषण पर्व का महत्व	122–127
53.	कालिकाल सर्वज्ञ आचार्य श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म. सा. का जीवन चरित्र	128–130
55.	मंत्र की साधना	131
56.	श्री गौड़ी पार्श्वनाथ भगवान, मुम्बई	132–133
57.	जैनों की स्थिति	134
58.	भारत में जैनों की जनसंख्या	135–136
59.	भारत में मूर्तिपूजक संघ के साधु-साध्वी की संख्या (श्वेताम्बर)	137–138
60.	पद्मनाभि गाय	139
61.	संदर्भित पुस्तकों की सूची	140
62.	मेवाड़ गौरव कर्मवीर, दानवीर पुरूष : करमाशा दोशी	141–152

श्री केसरियाजी (मेवाड़)